INTERNATIONAL JOURNAL OF HISTORY

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2025; 7(1): 111-113
Received: 02-01-2025
Accepted: 18-01-2025

पंकज कुमार शर्मा
इतिहास, मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला, विश्वविद्यालय,जयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
पंकज कुमार शर्मा
इतिहास, मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला, विश्वविद्यालय,जयपुर, राजस्थान, भारत

झुंझुनू जिले के ऐतिहासिक स्थलों का सांस्कृतिक विवेचन

पंकज कुमार शर्मा

सारांश
झुंझुनू इतना संगीतमय शब्द है जो कानों में पड़ते ही संगीत घोलने लगता है। आँखें बंद कर झुंझुनू शब्द सुनें तो मानसपटल पर किसी शिशु का मन बहलाने वाला खनकता खिलौना, झुनझुना आ जाता है। झुंझुनू एक ऐतिहासिक नगर के साथ एक जिला भी है। प्राचीन भारतीय साहित्यों में यह स्थान महाभारत के मत्स्य राज्य के एक भाग के रूप में दर्शाया गया है। ऐसा माना जाता है कि यह वही स्थान है जहां पांडवों ने, अपने अज्ञातवास के समय राजा विराट की राजसभा में विभिन्न पात्र निभाने से पूर्व, अपने अस्त्र–शस्त्र छुपाये थे। इस स्थान का पिछला इतिहास देखा जाए तो इस स्थान पर चौहान वंश, इस्लामिक शासकों तथा अंततः शार्दूल सिंह ने राज किया था। यह शहर कई भव्य भित्तिचित्रों और भव्य महलों के लिए प्रसिद्ध है।

कुटशब्दः इतिहास, सस्कृति, भित्ति चित्र, स्मारक, झुंझुनू

प्रस्तावना
राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र में स्थित झुंझुनू का इतिहास एक हजार साल पुराना है। इस दौरान इस क्षेत्र पर विभिन्न राजवंशों के राजाओं ने शासन किया। ऐसा माना जाता है कि विक्रम संवत 1045 में इस पर चौहान वंश का शासन था। इसके पश्चात् सन् 1450 में, मोहम्मद खान ने मुस्लिम शासन स्थापित करने के लिए चौहानों को हराया। फिर 1730 में, ठाकुर सरदूल सिंह ने अपना खुद का राजवंश स्थापित करने के लिए सिंहासन पर कब्जा कर लिया। अंग्रेजी शासन काल में मेजर हेनरी फॉरेस्टर नामक एक ब्रिटिश कमांडर थोड़े समय के लिए आभासी शासक बन गया। झुंझुनू एक पुराना और ऐतिहासिक शहर है जिसका अपना जिला मुख्यालय है। यह जिला अपनी भव्य हवेलियों पर भित्तिचित्रों के लिए प्रसिद्ध है। यह शहर जुझारसिंह नेहरा के नाम पर सन 1730 में बसाया गया था। कायमखानी नवाबों ने पंद्रहवीं शताब्दी में इस शहर की स्थापना की थी।
शेखावाटी का झुंझुनू क्षेत्र, जिसे अक्सर दुनिया की सबसे बड़ी 'ओपन–एयर गैलरी' के रूप में जाना जाता है, एक सांस्कृतिक स्वर्ग है। देवताओं, राजघरानों और आम लोगों के जीवन को दर्शाने वाले भित्तिचित्रों के साथ, यह क्षेत्र भारतीय समाज के ऐतिहासिक विकास के बारे में बहुत कुछ बताता है। यहाँ घूमना एक जीवंत इतिहास की किताब का एक–एक पन्ना पलटने जैसा है।[1]
हिन्दू और मुस्लिम शासकों के अधीन रहा झुंझुनू शहर राजस्थान में सांप्रदायिक सद्भाव की दृष्टि से एक विशिष्ट स्थान रखता है। दिल्ली, जयपुर, बीकानेर, जोधपुर, अलवर, सीकर, चुरू, नारनौल, रेवाड़ी व अन्य स्थानों से सीधा जुड़ा हुआ यह शहर भित्ति चित्रों, स्मारकों, धार्मिक स्थलों और तालाबों आदि की विविधताओं का दर्शन कराने वाला अनूठा शहर है।
ऐतिहासिक स्थलों एवम् लोक संस्कृति का किसी भी देश की सस्कृति में महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। राजस्थान ऐतिहासिक स्थलों की दृष्टि से सम्पूर्ण विश्व के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। राजस्थान का झुंझुनूं क्षेत्र इस क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। इस क्षेत्र के ऐतिहासिक स्थलों एवम् लोक संस्कृति ने इसको एक अलग पहचान दी है। यहां के ऐतिहासिक स्थलों एवम् लोक संस्कृति ने इस क्षेत्र के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। इस क्षेत्र को यहां के ऐतिहासिक किलों, हवेलियों, बावड़ियों एवं उनमें मिलने वाली विशिष्ट चित्रकारी और स्थापत्य शैली के लिए विश्वभर में जाना जाता है।
झुंझुनू में कमरुद्दीनशाह की दरगाह का विशाल और विहंगम परिसर देखने लायक है। वहीं पर बना मनसा माता का मन्दिर भी दर्शनीय है। इन दोनों स्थानों से शहर का नयनाभिराम दृश्य बहुत आकर्षक लगता है। ईश्वरदास मोदी की हवेली में भित्ति चित्रों की भव्यता के साथ–साथ सैकड़ों झरोखों की चित्ताकर्षक छटा भी दर्शनीय है। शहर में बना खेतड़ी महल एक प्रकार का हवामहल है तो मेदत्नी बावड़ी और बदलगढ़ भी नजरों में कैद हो जाने वाले स्थल हैं। समस तालाब, चंचलनाथ टीला, जोरावागढ़, बिहारी जी का मन्दिर, बंधे का बालाजी, रानी सती मन्दिर, खेमी शक्ति मन्दिर,

लक्ष्मीनाथ जी का मन्दिर, दादाबाड़ी, अरविन्द आश्रम, मोडा पहाड़, खेतान बावड़ी, शेखावत शासकों की छतरियाँ, तीब्देवालों की हवेलियाँ, नवाब रुहेल खान का मकबरा, जामा मस्जिद तथा झुंझुनू के निकट आबूसर में नव स्थापित शिल्पग्राम व ग्रामीण हाट जैसे अनेक अन्य ऐतिहासिक स्थल भी झुंझुनू में हैं।[2]

सभी ऐतिहासिक इमारतों में से खेतड़ी महल को झुंझुनू वास्तुकला का सबसे बेहतरीन नमूना कहा जाता है। इस पवन महल का निर्माण 1770 में भोपाल सिंह ने करवाया था, जो शर्दुल सिंह के पोते थे। भोपाल सिंह खेतड़ी के संस्थापक भी थे और इसलिए इसका नाम खेतड़ी महल पड़ा। दीवारों की जगह इस महल में कई संगमरमर के खंभे हैं। इसलिए, इस महल से हवा आसानी से गुजर सकती है। महल तक जाने के लिए एक रैंप भी है। इसे राजपूत राजाओं और कुलीनों के लाभ के लिए बनाया गया होगा, जो अपने घोड़ों पर सवार होकर आते थे। यह कहना गलत नहीं होगा कि जयपुर में हवा महल को खेतड़ी महल के मॉडल पर बनाया गया था।

खेतड़ी महल वास्तुकला की सुंदर कलाकृति है। खेतड़ी महल को झुंझुनू का हवामहल भी कहा जाता है। क्योंकि इस महल में कोई खिड़की–दरवाजे नहीं हैं। इसी महल से प्रेरित होकर के जयपुर के राजा सवाई प्रतापसिंह ने 1799 में जयपुर में हवा महल का निर्माण कराया था। यह महल अपने संकीर्ण गलियारों के कारण भूल–भुलैया जैसा लगता है। यद्यपि आज के समय में यह महल महज एक खंडहर के रूप में अवशेष रह गया है। लेकिन तत्कालिक समय में यह महल अपनी भव्यता, सुंदरता तथा अनेक विशेषताओं के कारण आकर्षण का केंद्र रहता था।[3]

भोपालगढ़ का किला झुंझुनू जिले का एक मुख्य ऐतिहासिक स्थल है। यह किला झुंझुनू जिले के खेतड़ी तहसील में स्थित है। खेतड़ी तहसील शेखावाटी क्षेत्र के अंतर्गत आती है। भोपालगढ़ का किला झुंझुनू के ऐतिहासिक स्थलों में से एक है। भोपालगढ़ किले के चारों तरफ पहाड़ियां है। भोपालगढ़ किले का निर्माण, खेतड़ी के महाराजा अजीत सिंह के द्वारा करवाया गया था। यह किला चारों ओर ऊंची ऊंची दीवारों से घिरा हुआ है। भोपालगढ़ किले के अंदर राजा रानी का कमरा और श्री कृष्ण जी का मंदिर देखने के लिए मिलता है। किले की दीवारों एवं छतों में पेंटिंग की गई है, जो बहुत सुंदर है। यहां पर मुरल पेंटिंग की गई है।

जोरोवरगढ़, जिसे जोरावरगढ़ के नाम से भी जाना जाता है, 1741 में जोरोवर सिंह द्वारा बनवाया गया एक किला है। वह ठाकुर शार्दुल सिंह के सबसे बड़े बेटे थे और अपने पिता की मृत्यु के बाद राजा बने। अपने सुनहरे दिनों में यह किला एक भव्य आकर्षण रहा होगा, लेकिन आज इसका अधिकांश हिस्सा खंडहर में है। इस किले का जनाना परिसर, जिसमें शाही परिवार की महिलाएँ रहती थीं, अब पूरी तरह से टूट चुका है।[4]

झुंझुनू जिले में पहाड़ी की चोटी पर स्थित बादलगढ़ किला कभी एक मजबूत सैन्य किला था जो आक्रमणकारियों के खिलाफ एक रणनीतिक दृष्टिकोण प्रदान करता था। आज यह किला अनगिनत लड़ाइयों और साहस की कहानियों का मूक दर्शक बनकर खड़ा है। अपने भव्य अग्रभाग और शहर के मनोरम दृश्यों के साथ, बादलगढ़ किला आज भी ऐतिहासिक दृष्टि से बेहद महत्त्वपूर्ण है।

बादलगढ़ का किला झुंझुनू जिले का एक प्रसिद्ध किला है। यह प्राचीन किला है। यह किला अब खंडहर अवस्था में देखने के लिए मिलता है। यह किला झुंझुनू जिले के बीचो–बीच बना हुआ है। इस किले का निर्माण नवाब फैजल खान के द्वारा 16वीं शताब्दी में करवाया गया था। बादलगढ़ किला धार्मिक सद्भावना का संदेश देता है। इस किले के एक तरफ आपको दुर्गा जी का मंदिर देखने के लिए मिलता है और किले के दूसरे तरफ हजरत इस्माइल रहमतुल्लाह अलैह की दरगाह देखने के लिए मिलती है। यह किला हिंदू मुस्लिम भाईचारे का प्रतीक है। किले के अंदर दुर्गा मां और बजरंगबली के मंदिरों का निर्माण करवाया गया है। किले का मुख्य द्वार दक्षिण दिशा में है।[5]

चूँकि यह किला एक अस्तबल के रूप में बनाया गया था, इसलिए यहाँ की साज–सज्जा काफी सामान्य है। इस किले में कोई शीश महल या अन्य बारादरी और मंडप नहीं हैं। इस किले को देखने आने वाले लोग अक्सर इसके विशाल आकार और सुरक्षा व्यवस्था को देखकर चकित रह जाते हैं। यह वास्तव में एक भव्य संरचना है जिसके चारों ओर ऊँची और सुरक्षात्मक दीवारें हैं। यह दर्शाता है कि झुंझुनू के नवाब फजी खान के लिए जानवर कितने कीमती थे।

सुख महल झुंझुनू जिले का एक मुख्य ऐतिहासिक पर्यटन स्थल है। यह झुंझुनू जिले के खेतड़ी में स्थित है। सुख महल एक ऊंची पहाड़ी पर बना हुआ है। सुख महल दो मंजिला महल है। सुख महल को प्राचीन समय में खेतड़ी के शासक गेस्ट हाउस के रूप में प्रयोग करते थे। यहां पर स्वामी विवेकानंद जी भी रुके थे। खेतड़ी के सुख महल से चारों तरफ का सुंदर दृश्य देखने के लिए मिलता है।[6]

झुंझुनू का एक छोटा सा गांव अलसीसर, आकर्षक अलसीसर महल का घर है, जिसे अब हेरिटेज होटल में बदल दिया गया है। यह अपने विस्तृत दर्पण कार्य, भित्तिचित्रों और भव्य कमरों के साथ राजस्थान की शाही विरासत का एक प्रमाण है। यहां का आकर्षण विलासिता और इतिहास के गलियारों से होकर गुजरने जैसा है, इसी वजह से यह ऐतिहासिक दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण है।

मेड़तनी की बावड़ी झुंझुनू का प्रमुख ऐतिहासिक स्थल है। यह एक सुंदर बावड़ी है। इस बावड़ी का निर्माण हिंदू शासक शार्दुल सिंह शेखावत की रानी मेड़तनी ने करवाया था। इस बावड़ी का निर्माण सन 1783 ई में करवाया गया था। इसी वजह से इस बावड़ी का नाम मेड़तनी बावड़ी रखा गया। इस बावड़ी में नीचे जाने के लिए सीढ़ियां बनी हुई है। यहां पर एक विशाल प्रवेश द्वार देखने के लिए मिलता है, जो बहुत सुंदर लगता है। पहले इस बावड़ी में नीचे उतरकर लोग स्नान किया करते थे। लेकिन वर्तमान में इस बावड़ी की हालत बहुत खराब है और प्रशासन द्वारा इसकी देखरेख नहीं की जा रही है, जिससे यह बावड़ी धीरे–धीरे ध्वस्त होती जा रही है। इस बावड़ी के पानी में चमत्कारिक गुण है, जिसके कारण इस बावड़ी के पानी में स्नान करने से कुष्ठ रोग दूर होता है। पहले यहां पर कुष्ठ रोगी स्नान किया करते थे। यहां पर कुष्ठ रोगियों का जमावड़ा लगा रहता था।[7]

शेखावाटी के अन्य नगरों के समान झुंझुनू भी अपनी रंगबिरंगी हवेलियों पर गर्व करता है। पोदार हवेली म्यूजियम झुंझुनू जिले का एक मुख्य आकर्षण स्थल है। इस हवेली का निर्माण 1920 में सेठ आनंदी लाल पोद्दार के द्वारा करवाया गया था। यह हवेली बहुत सुंदर है। पोदार हवेली संग्रहालय झुंझुनू जिले के नवलगढ़ तहसील में स्थित है। इस हवेली का निर्माण 1902 में करवाया गया था। इस हवेली में बहुत सारी गैलरी बनाई गई है, जहां पर अलग–अलग वस्तुओं को प्रदर्शित किया गया है। यहां पर कपड़े, पगड़ी, म्यूजिकल इंस्ट्रूमेंट, मूर्तियाँ, राजस्थान के किलो की अलग–अलग गैलरी देखने के लिए मिलती है। हवेली में कई अच्छे चित्र अंकित है। इसका प्रमुख आकर्षण रेलगाड़ियां, मोटर और गणगौर की सवारी का दृश्य है। यहां पर उच्च कोटि का संगमरमर पत्थर और लकड़ी की नक्काशी का सुंदर संग्रह देखने के लिए मिलता है।

कमल मोरारका हवेली संग्रहालय झुंझुनू जिले का एक मुख्य पर्यटन स्थल है। झुंझुनू जिला शेखावटी रीजन का एक मुख्य जिला है। कमल मोरारका हवेली संग्रहालय झुंझुनू जिले का मुख्य पर्यटन स्थल है। इस हवेली संग्रहालय में आपको बहुत सारी वस्तुओं का संग्रह देखने के लिए मिलता है। संग्रहालय में आपको फ्रेस्कोइस पेंटिंग देखने के लिए मिलती है, जो बहुत ही सुंदर है। यह पेंटिंग आकर्षण का मुख्य केंद्र है।[8]

झुंझुनू की संकरी गलियों के बीच बसी मोदी हवेली शेखावाटी वास्तुकला की भव्यता को दर्शाती है। इस भव्य इमारत में दो समान हवेलियाँ हैं, जिनमें पौराणिक, ऐतिहासिक और समकालीन दृश्यों को दर्शाने वाले विस्तृत भित्तिचित्र हैं। इस इमारत को देखना एक विशाल किताब के पन्नों को पलटने जैसा है, जहाँ प्रत्येक पेंटिंग अपनी कहानी बयां करती है।

झाबरमल टिबड़ेवाल हवेली अपेक्षाकृत नवीन हवेली प्रतीत होती है। यह झुंझुनू में स्थित हवेलियों से यह हवेली किंचित भिन्न प्रतीत होती है। इसके भित्तिचित्र अत्यंत भिन्न हैं। यह किंचित आधुनिक प्रतीत होती है। क्योंकि इनमें प्रयोग किये गए रंग ठेठ भारतीय ना होकर वैश्विक हैं। अन्य हवेलियों के भित्तिचित्रों से विपरीत ये भित्तिचित्र जटिल एवं विषयगत भी नहीं हैं। फिर भी इसे एक ठेठ शेखावाटी हवेली कहा जा सकता है। टिबड़ेवाल झुंझुनू का प्रमुख व्यापारी परिवार है। जिसके द्वारा इस हवेली का निर्माण करवाया गया था।[9]

अपने महलों और हवेलियों के लिए मशहूर मंडावा राजस्थानी राजाओं की शाही जीवनशैली की झलक पेश करता है। मुरमुरिया हवेली, गोयनका डबल हवेली और मंडावा कैसल शहर की समृद्ध विरासत के बेहतरीन उदाहरण हैं। झुंझुनू जिले का टिबरेवाला और गनेरीवाला हवेलियाँ इन दो ऐतिहासिक हवेलियों में अद्भुत भित्तिचित्र, भव्य वास्तुकला और मारवाड़ी समुदाय की जीवनशैली की समृद्ध झलक देखने को मिलती है। इन संरचनाओं के बीच प्रकाश और छाया का खेल एक ऐसा मनमोहक माहौल बनाता है जिसका विरोध करना मुश्किल है। यह झुंझुनू जिले में स्थित वास्तुकला का अद्भुत उदाहरण है।[10]

झुंझुनू जिले का एक अन्य रत्न नवलगढ़ है, जो अपने भित्तिचित्रों और मोरारका हवेली और आठ हवेली जैसी हवेलियों के लिए प्रसिद्ध है। यह शहर, जिसे अक्सर 'ओपन आर्ट गैलरी' के रूप में जाना जाता है, जो दर्शकों को एक कलात्मक असाधारणता का अनुभव कराता है, जहां हर कोने से कलात्मकता झलकती है।

नवलगढ़ की हवेलियों की भित्तियों पर बारहमासे चित्रों का भी अंकन किया गया है इनमें मध्ययुगीन कार्यकलाप और रंग रोगन राजस्थानी संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किए गए है। कुछ हवेलियों पर देवी–देवताओं के चित्र बने हुए है तो कुछ पर विवाह संबंधी चित्र। इनके साथ ही लोकपरक और श्रृंगारिकता परक चित्र भी है। ऐसे चित्रों की मांगकलिकता देखते ही बनती है। भित्ति पर उकेरे गए इन चित्रों को देखने से पता चलता है कि आस–पास के जीवन को हल्के गहरे रंगों से चित्रित करने के पीछे भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण बनाए रखने का उद्देश्य रहा। ये चित्र यहां के निवासियों की कलात्मकता के प्रेम को दर्शाते है।[11]

झुंझुनूं में कुछ हवेलियों में बड़े ही सुन्दर व अनूठे प्रतीकात्मक चित्र बने हुए हैं जैसे नौ–नारी कुजर तथा पंच नारा अश्व। साधारणतः कई हवेलियों में समान चित्र मिलते है जैसे लट्टू वाली, पंखे वाली, राजा रानी, पंख चलाती दासियां, सखियां, हुक्का पीते हुए बादशाह, बिलोवण करती हुई ग्रहणी, हाथी, घोड़े, रथ, पालकी, बैलों की जोड़ी, ऊंटों पर सवार सजीले जवान, बारात, राग–रागनियां, कतान, पेड़–पौधों के दृश्य, पौराणिक कथानको के दृश्य, बेल बूंटे, फूल पत्तियां आदि। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक झुंझुनूं के चित्रकार भी पाश्चात्य शैली से प्रभावित हो चुके थे अतः इसका प्रभाव भित्ति–चित्रों पर दिखाई देने लगा।[12]

देश के मुकुट में मणि की भांति सुशोभित झुंझुनू का ऐतिहासिक दृष्टि से भी महत्त्व शीर्ष पर हैं! मूर्तिकला के अकूत वैभव और भित्ति चित्रों से लदी पड़ी यहाँ की मोहक हवेलियाँ हरी भरी वादियाँ स्वर्णिम भंडार सा आभास देते बालू के टीले, इतिहासकारों को अपनी और आकर्षित करते हैं ! यही झुंझुनू की माटी की विशेषता हैं ! झुंझुनू जिले में मंडवा, मुक्कुन्द्गढ़, डूंडलोड, महनसर, बिसाऊ आदि के किले और राजप्रासाद, अलसीसर, मलसीसर, झुंझुनू, परसरामपुरा, उदायापुरावती, गांगियासर आदि स्थानों पर स्थित कलात्मक कुए, बावडी व् छतरियां, नरहड़, झुंझुनू, चिडावा, नवलगढ़, लोहार्गल, किरोडी, डाबडी, मंडावा, टीबा बसई आदि के भव्य धार्मिक स्थल, जिले के गाँवो और कस्बों में बने पुराने व् कलात्मक जोहड व् तालाब तथा होटल हेरिटेज परम्परा को प्रतिबिंबित करते हैं।

निष्कर्ष

संक्षेप में झुंझुनूं गौरवशाली प्राचीन स्मारक प्रस्तुत करने में बहुत समृद्ध है। मंदिर, मस्जिद, किले, महल, मकबरे, बावड़ी, छतरियां और उत्कृष्ट भित्तिचित्रों वाली हवेलियां जो झुंझुनू के गौरवशाली अतीत के बारे में पूरी सहजता से बताती हैं। प्यारा झुंझुनूं कई रंगीन उत्सवों का स्थल भी है। भारत के राजस्थान में बसा झुंझुनू संस्कृति, रंग और इतिहास का जीवंत नजारा है। यह असंख्य आकर्षणों की एक आकर्षक झांकी है, जिनमें से प्रत्येक एक अनूठी कहानी बयां करता है। इस शहर की यात्रा करने पर आपको आकर्षक रत्न देखने को मिलेंगे, जो भारत की विरासत की समृद्ध, सामंजस्यपूर्ण लय के साथ प्रतिध्वनित होते हैं।

संदर्भ

1. हरफूल सिंह आर्य, शेखावाटी के ठिकानों का इतिहास एंव योगदान, जयपुर पंचशील प्रकाशन, जयपुर 1987, पृ. 3–5
2. https://www.jhunjhunuonline.in/guide/historical-monuments-in-jhunjhunu
3. एल. आर भल्ला, सामयिक राजस्थान, राजस्थानी भाषा एवं संस्कृति, कुलदीप पब्लिकेशन्स, अजमेर 2000, पृ. 33
4. http://www.jhunjhunu.20m.com/blank_1.html
5. मोहनलाल गुप्ता,, राजस्थान : जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर 2009, पृ. 103–111
6. https://hindi.nativeplanet.com/travel-guide/places-to-visit-in-jhunjhunu-rajasthan-hindi-003352.html
7. मिश्र, रतनलाल, शेखावाटी : कला और समाज, मण्डावा, झुन्झुनूं : कुटीर प्रकाशन, झुन्झुनूं 1998, पृ. 30–42
8. https://hindi.nativeplanet.com/travel-guide/places-to-visit-in-jhunjhunu-rajasthan-hindi-003352.html
9. https://www.jhunjhunuonline.in/guide/historical-monuments-in-jhunjhunu
10. http://www.jhunjhunu.20m.com/blank_1.html
11. https://www.jhunjhunuonline.in/guide/historical-monuments-in-jhunjhunu
12. https://www.rajasthantourplanner.com/blog/10-best-tourist-places-in-jhunjhunu/